इतिहास की परिभाषा

इतिहास यूनानी शब्द 'हिस्टोरिया' (historia) का पर्याय है। इसका अर्थ ज्ञान (knowledge) खोज (enquiry), शोध (research), वृतांत (narration) व अनुसंधान है। यह एक व्यापक शब्द है, जिसके अन्तर्गत, प्राक्-इतिहास (Pre-history), आद्य इतिहास (Proto-history) और विशेष इतिहास (Particular-history) है।

प्राचीन काल से आज तक प्रत्येक इतिहासकार ने अपने ढंग से इतिहास को परिभाषित किया है। इतिहास के जनक हेरोडोटस के शब्दों में "इतिहास अतीत में मानव के कार्यकलापों का विज्ञान है।"

इतिहास मानव-जीवन के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करता है और इसका विभिन्न सामाजिक विज्ञानों से गहरा संबंध है।

इतिहास और भूगोल

इतिहास और भूगोल का गहरा संबंध है। भूगोल के प्रारंभिक ज्ञान के बिना इतिहास की कुछ शाखाओं का अध्ययन नहीं किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप, भौगोलिक ज्ञान के बिना राजनयिक और सैन्य इतिहास का अध्ययन संभव नहीं है। प्रो० माइकेलेट का विचार है कि इतिहास का आधार भूगोल है। वह कहता है, "भौगोलिक आधार के बिना इतिहास के निर्माता मन का अस्तित्व

संभव नहीं है। भूमि केवल जनता स्थल ही नहीं है। इसका उपयोग खाद्य पदार्थ, जलवायु आदि सैकड़ों रूपों में होता है।"

प्रागैतिक काल की जानकारी के लिए भूगोल का ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि इसके लिए कोई विश्वसनीय दस्तावेज उपलब्ध नहीं है। इस काल के इतिहास की संरचना भू-दृश्य के पर्यवेक्षण और विश्लेषण द्वारा की जा सकती है। भूगोल के ज्ञान के कारण ही हम किसी देश के प्राकृतिक बनावट, शहरीकरण और औद्योगिकरण की प्रक्रिया को समझ सकते हैं। देश का समुद्र से आच्छादित होना, उत्तम बन्दरगाह का होना, देश का नौ-सेना प्रधान और व्यापारिक देश बनना, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जगत में प्रभावशाली देश बनना भूगोल के द्वारा ही जाना जा सकता है।

राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण में भूगोल का हाथ रहा है। मॉंटेस्क्यू, बकल, हेटिंगटन आदि ने बतलाया है कि किसी देश की सभ्यता वहाँ की जलवायु से काफी प्रभावित होती है। अतः किसी देश के इतिहास की समुचित जानकारी के लिए उस देश का भौगोलिक ज्ञान आवश्यक है।

इतिहास और अर्थशास्त्र -

इतिहास और अर्थशास्त्र में गहरा संबंध है। समाज में व्यक्ति की गतिविधियाँ अर्थ से संचालित होती है अतः इतिहासकार को अर्थशास्त्र के प्रारंभिक सिद्धांतों से परिचित होना चाहिए। सामान्य इतिहासकार सामान्य इतिहास की रचना करते वक्त आर्थिक इतिहासकार के निष्कर्षों का उपयोग करता है। अतः इतिहासकार क्षतिपूर्ति, 1920-30 के आर्थिक संकट, न्यू डील आदि की उपेक्षा नहीं कर सकता है।

इतिहास और समाज विज्ञान (History and Sociology) -

इतिहास और समाज में घनिष्ठ संबंध है। दोनों समाज में व्यक्ति का अध्ययन करते हैं और दोनों में केवल दृष्टिकोण का अंतर है। समाज विज्ञानी इमाइल दुर्खीम और मैक्स वेबर ने ऐतिहासिक अध्ययन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। वेबर ने आधुनिक राज्य के उदय में नौकरशाही के महत्व पर प्रकाश डाला है। समाजशास्त्रियों ने समाजशास्त्र के इतिहास पर आधारित बनाया है। इतिहास भी समाजशास्त्रियों द्वारा उत्पादित सामग्री से लाभ प्राप्त करता है। प्रो० कार ने इतिहास और समाजशास्त्र की घनिष्ठता पर बल देते हुए कहा है " समाजशास्त्र को अति व्यापक सामान्यीकरण

होता है जो यह इतिहास की तरह अद्वितीय और सामान्य के बीच संबंध कायम करे, लेकिन यह गतिशील भी हो, यह वर्तमान समाज का ही नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन और विकास का भी अध्ययन करे।

प्रो० कार्र ने इतिहासकार के लिए समाजशास्त्र के ज्ञान का महत्व बताया है। उसके शब्दों में, "समाजशास्त्र सामाजिक प्रक्रियाओं और सामाजिक कारणों का एक सामान्यीकृत दृष्टिकोण प्रदान करता है। इतिहास भी सामाजिक समूहों के आर्थिक, राजनीतिक, सैनिक, धार्मिक संस्थाओं आदि का अध्ययन करता है। अतः इतिहासकार के लिए समाजशास्त्र के प्रारंभिक सिद्धांतों की जानकारी आवश्यक है।"

इतिहास और राजनीति शास्त्र –

इतिहास और राजनीति शास्त्र में घनिष्ठ संबंध है। प्रो० सीले (Seeley) ने कहा है, "इतिहास मूल है और राजनीति शास्त्र फल है।" प्रो० रॉबसन ने कहा है कि "राजनीति की मुख्य धारा इतिहास है। यह नदी में बालू में स्वर्ण कण के समान है।" इतिहासकार राजनीतिक सिद्धांतों के ज्ञान के अभाव में ऐतिहासिक घटनाओं का सही मूल्यांकन नहीं कर सकता। इसी तरह वह राजनीतिक संस्थाओं के ज्ञान के अभाव में राजनीतिक संस्थाओं का इतिहास नहीं लिख सकता। इसी तरह राजनीतिशास्त्र शास्त्र के विकास के

के लिए इतिहास का ज्ञान आवश्यक है।

इतिहास और पुरातत्व

पुरातत्व का संबंध उत्खनन से है। उत्खनन से प्राप्त मुद्रा, मुहर, मानव सभ्यता-संस्कृति के चिन्ह इत्यादि इतिहास संरचना में महत्वपूर्ण होते हैं। यह बहुतायत रूप में मानव के पुराकाल के बारे में अध्ययन करता है। जैसे सर जॉन मार्शल और मार्टिन व्हीलर तथा भारतीय पुरातत्वविदों ने ही सैंधव सभ्यता के बारे में जानकारी दी। प्रख्यात पुरातत्वविद प्रिंसेप ने अशोक के अनेक अभिलेखों को पढ़ा, अनेक पुरातत्वविदों ने अशोक और मौर्यकालीन स्मारकों का पता लगाया। पुरातात्विक अध्ययन न केवल भारत में बल्कि दुनिया के अन्य देशों में भी लोकप्रिय है। प्राक्-इतिहास की रचना पुरातत्व से ही संभव हो सका है। अतः पुरातत्व और इतिहास में गहरा संबंध है।

इतिहास और नृविज्ञान (History and Anthropology)

नृविज्ञान या मानव विज्ञान प्रजाति का अध्ययन करता है। भारत में विभिन्न नृजातीय लोग रहते हैं। आर्य और अनार्य या द्रविड़ का अध्ययन नृविज्ञान का एक प्रमुख विषय है। जर्मनी में हिटलर यहूदियों का